P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-4* December- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति – एक अध्ययन

Attitude Towards Sex Education of Upper Primary Level Students - A Study

Paper Submission: 15/12/2020, Date of Acceptance: 27/12/2020, Date of Publication: 28/12/2020

सुषमा सिंह
डीन
शिक्षा शास्त्र विभाग,
कोटा विश्वविद्यालय,
कोटा, राजस्थान, भारत

विनिता शर्मा
शोधार्थी
शिक्षा शास्त्र विभाग,
कोटा विश्वविद्यालय,
कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश

शिक्षा के द्वारा नये समाज का निर्माण होता है। वर्तमान में बच्चों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना, विद्यालय पाठ्यक्रम में यौन शिक्षा को सम्मिलित कर उन्हें अपने शरीर में हुए परिवर्तनों की जानकारी देना। जिससे उनके मन मस्तिष्क में कोई गलत धारणाऐं न बैठे। यौन शिक्षा के द्वारा बालक के स्वास्थ्य एवं विकास में अधिकाधिक वृद्धि हो ओर वह यौन विकारों से ग्रस्त ना हो। यौन शिक्षा एक उपचारात्मक तरीका है जो व्यक्तिगत व सामूहिक रूप से यौन समस्याओं से बचाव करता है। यह शोध कार्य वर्तमान में यौन शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति कैसी हो? जानने की कोशिश की गई कोटा शहर के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों से यौन शिक्षा के द्वारा उनकी शारीरिक परिर्तनों एवं सेक्स संबंधी समस्याओं को लेकर जो भी जिज्ञासायें है उनका समाधान प्राप्त किया जा सकता है।

A new society is created through education. Presently making children health conscious, including sex education in school curriculum and informing them about the changes in their body. So that there are no misconceptions in his mind. Through sexual education, there should be maximum increase in health and development of the child and he should not suffer from sexual disorders. Sex education is a curative method that personally and collectively protects against sexual problems. What should be the attitude of students towards sex education in this research work? Attempted to know, through sexual education from the students of the upper primary level of Kota city, whatever curiosities about their physical changes and sex problems can be solved.

मुख्य शब्द : यौन शिक्षा, अभिवृत्ति, विद्यार्थी, स्वास्थ्य
Sex Education, Aptitude, Student, Health.

प्रस्तावना

परिवार बालक की प्रथम पाठशाला होती है, परिवार से ही बालक सामान्य शिष्टाचार सिखता है। वर्तमान में परिवार की जिम्मेदारी विद्यालय एवं शिक्षकों द्वारा निभायी जा रही है। माता–पिता के बाद शिक्षक ही विद्यार्थियों के सबसे नजदीक होते है। बच्चों की भावनाओं और उनके बदलते स्वभाव को अभिभावक एवं शिक्षक ही सबसे पहले चिन्हित करते है। विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा प्रदान ज्ञान के द्वारा विद्यार्थियों का मानसिक व भावात्मक विकास होता है। उचित शिक्षा ही मनुष्य को सामान्य प्राणी से भिन्न बनाती है। शिक्षा के लक्ष्य के बिना हम किसी भी आदर्श समाज की स्थापना नहीं कर सकते। शिक्षा के द्वारा समाज में कई परिवर्तन लाये जा सकते है तथा सामाजिक समस्याओं पर नियंत्रण भी शिक्षा द्वारा ही किया जा सकता है।

शिक्षा द्वारा नये समाज का निर्माण होता है। यह सदैव भविष्य के लिए तैयार की जाती है। वर्तमान पाठ्यक्रम रूचिकर और विद्यालय वातावरण बालकों के स्वभाविक विकास के अनुरूप बनाया गया है, परन्तु शिक्षा के इतने सारे आयाम होने के बावजूद भी वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में शिक्षा स्वयं को स्थापित नहीं कर पा रही है क्योंकि शिक्षा बाल केन्द्रित तो है परन्तु बालकों को वर्तमान सामाजिक पस्थितियों से स्वयं को कैसे बाहर निकाला जाये यह नहीं सिखा पा रही है। पाठ्यक्रम लचीला तो है परन्तु वर्तमान समय में बालकों की ज्वलन्त समस्याओं को समावेशित नहीं किया गया। प्राचीन समय से ही हमारे समाज में यौन विषयक बातों की चर्चा वर्जित मानी जाती है। निसंदेह यौनगत

भावनाओं और व्यवहारों पर उस संस्कृति की गहरी छाप पड़ती है। जिसमें बालक का पालन–पोषण होता है। भारतीय समाज का शिक्षित वर्ग भी इस विषय के प्रति अत्यन्त संवेदनशील तथा संकुचित प्रवृत्ति वाला है।

सभी वर्ग के लोग इस विषय पर बात करने से हिचकिचाते है जिसके कारण लोगों को यौन संबंधी सही जानकारी प्राप्त नहीं होती है। शिक्षकों और अभिभावकों में यौन शिक्षा को लेकर परस्पर विरोधी रूचियाँ है। किये गये शोध के अनुसार शिक्षक अक्सर जैविक जानकारी देते है, जहाँ माता–पिता नैतिक शिक्षा में अधिक रूचि रखते है। लेकिन छात्र जीवन कौशल आधारित यौन शिक्षा में अधिक अंतदृर्ष्टि प्राप्त करना चाहते है। इस प्रकार, इन हितों पर कार्य करने और सही प्रकार से शिक्षक प्रशिक्षण को विकसित करने की आवश्यकता है।

यौन शिक्षा के संदर्भ में कहा जाये तो किशोर एवं युवाओं का विस्तृत वर्ग इस समस्या से ग्रसित है। उन्हें उचित शारीरिक विकास एवं होने वाले बदलाव सम्बन्धित पहलुओं पर जानकारी नहीं मिलने से स्वभाव एवं यौन समस्याएं और भी बढ़ जाती है। वर्तमान में विद्यालय शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर यौन शिक्षा का अभाव में हुए परितर्वनों को लेकर तनावग्रस्त रहते हैं, जिससे उसके मन मस्तिष्क में कई धारणाएँ बैठ जाती है। युवा कई मानसिक रोग, यौन व्यवहार, एच.आई.वी/एड्स से ग्रसित हो रहे है। कई विद्यार्थी गलत संगत में फंस जाते है। पुस्तकों, फिल्मों से जानकारी ढूँढ़ते है। बहुत से युवा पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण के कारण काम संबंधों के सोच विचारों में खोये रहते है। विद्यालयों में यौन शिक्षा देने की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक फ्रायड ने यौन शिक्षा को स्पष्ट करते हुए कहा है कि – यौन शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा से है जिसमें बालक को उसकी विभिन्न अवस्थाओं में स्वभाविक रूप से काम प्रवृत्ति की संतुष्टि व अभिव्यक्ति के लिए उचित अवसरों को प्राप्त करने तथा उचित विधियों का प्रयोग करने के लिए निर्देशन व शिक्षा प्रदान की जाती है ताकि वह अपने स्वास्थ्य की रक्षा एवं वृद्धि करते हुए सुख एवं आनन्दपूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर सके।

यौन शिक्षा से तात्पर्य से ऐसी शिक्षा से है जिससे बच्चे के स्वास्थ्य एवं विकास से अधिकाधिक वृद्धि हो और वह यौन विकारों से ग्रस्त न हो। यौन शिक्षा से तात्पर्य व्यक्ति को उन बातों की जानकारी देना नहीं है जिन्हें वे जानते है बल्कि वे आचरण सिखाना है जिसके वे अभ्यस्त नहीं है। यौन विकृत्तियों से बचने एवं सेक्स के प्रति स्वास्थ्य अभिवृत्ति का विकास करना ही यौन शिक्षा कहलाती है।

मेहता टी.एस. (1972) द्वारा राष्ट्रीय सेमीनार Sex Awareness Education कोलम्बो Curriculum Development of Sex Education पर पत्र वाचन किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यौन शिक्षा का सम्प्रत्यय का स्पष्टीकरण करना है यह स्पष्टीकरण राष्ट्र की आवश्यकता तथा मति के अनुसार होना चाहिए। उच्च प्राथमिक स्तर पर विद्यालयों में विद्यार्थी अन्य विषयों को गंभीरता से लेना है, किन्तु यौन शिक्षा से संबंधित जानकारी बहुत सोर स्रोतों से एकत्रित करना चाहते है, जिससे कई बार गलत जानकारी जुटा लेता है या अश्लील साहित्य के प्रति उसकी रूचि बढ़ जाती है। आधी–अधूरी जानकारी उनके लिए हानिकारक होती है। कई बार समाज में युवा पाश्चात्य जगत में विद्यमान यौन आचरण के खुलेपन व उन्मुक्तता से प्रभावित रहते है। यौनगत आचरण के खुलेपन ने यौन शिक्षा के विचार को जन्म दिया। वर्तमान में बढ़ते हुए यौन अपराधों एवं दुराचारों के कारण विद्यार्थियों को प्रारम्भ से ही यौन शिक्षा प्रदान करना आवश्यक हो गया है। यौन शिक्षा वैसे तो किशोर विद्यार्थियों को प्रदान की जाती है परन्तु प्राथमिक स्तर पर भी यह आवश्यक हो गई है। उच्च प्राथमिक स्तर पर यौन शिक्षा के माध्यम से सही व गलत स्पर्श के बारे में जानकारी दी जानी चाहिए। आज समाज में यौन शोषण की घटना आम हो गई है। वर्तमान सामाजिक ढाँचे को देखा जाये तो बालकों से संबंधित अनेक समस्यायें सामने आती है, जिससे समाचार, पत्र–पत्रिकायें भरे पड़े है। आज समस्त विश्व में यौन शिक्षा की हवा चल रही है। यौन शिक्षा एक ऐसा शैक्षिक साधन है जिसके द्वारा विद्यार्थियों को अपने शारीरिक विकास के स्तर के अनुकूल यौन भावना सम्बन्धी उचित ज्ञान, मानसिक एवं उपचार संबंधी ज्ञान तथा संतुलित व्यक्तित्व के विकास का प्रशिक्षण मिलता है।

अतः आज के वर्तमान समय में यौन शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति कैसी है? शोधकर्त्ता द्वारा इस समस्या पर शोधकार्य करने का मानस बनाया क्योंकि व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन काल में यौन आवश्यकता, प्रजनन एवं मानसिक स्वास्थ्य को समझना आवश्यक है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. यौन शिक्षा के प्रति उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों (छात्र एवं छात्राओं) की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. यौन शिक्षा के प्रति उच्च प्राथमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

साहित्य अवलोकन

1. देश में 1921 में यौन सम्बन्धी स्वच्छता के पाठ्यक्रम का प्रस्ताव रखा गया था जिसे शिक्षा बोर्ड द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया था। शंकर उदय एवं लक्ष्मी 1978 सेक्स एजूकेशन।
2. भारत सरकार द्वारा सन् 2000 में सबके लिए स्वास्थ्य उद्देश्य की प्राप्ति हेतु यौन स्वास्थ्य शिक्षा को जरूरी माना गया।
3. कुमार बी. सुब्बुराम मनोज और शशिकला (2017) दने एटीट्यूड ऑफ स्कूल टीचर्स टुवडर्स सेक्स, एजूकेशन इन श्रीरंगम, तालुका, त्रिची डिस्ट्रिक विषय पर शोध किया। उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना था। स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। शोध परिणाम में प्राप्त हुआ कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है तथा अधिकांश शिक्षकों की अभिवृत्ति यौन शिक्षा के प्रति सकारात्मक पायी गयी।

अध्ययन की परिकल्पना

1. यौन शिक्षा के प्रति उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों (छात्र एवं छात्राओं) की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।
2. यौन शिक्षा के प्रति उच्च प्राथमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों (छात्र एवं छात्राओं) की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

परिसीमन

1. अध्ययन केवल कोटा शहर में किया गया है।
2. अध्ययन हेतु उच्च प्राथमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है।
3. अध्ययन में चयनित सभी विद्यार्थी प्रायः 12 से 14 वर्ष तक के है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी ने अपनी शोध समस्या के उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु वर्णनात्मक विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

सर्वप्रथम कोटा शहर में स्थित उच्च प्राथमिक स्तर के समस्त विद्यालयों की सूची प्राप्त की गई। दो सरकारी एवं दो निजी उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। प्रत्येक विद्यालय से 20–20 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया क्योंकि इस विधि के अन्तर्गत सम्पूर्ण जनसंख्या की प्रत्येक इकाई के चुने जाने के समान अवसर होते है। इस प्रकार 80 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिनमें 40 छात्र एवं 40 छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया।

उपकरण

शोधार्थी ने अपने अध्ययन में यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को मापने के लिए ''स्वनिर्मित यौन शिक्षा अभिवृत्ति मापनी'' का प्रयोग किया है।

सांख्यिकी विधियाँ

प्राप्त दत्तों का वर्गीकरण व सारणीयन कर सांख्यिकी विधियों द्वारा विश्लेषण किया गया। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने मध्यमान, मानक विचलन व टी–मूल्य का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण परिणाम एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध कार्य में सार्थक परिणामों को प्राप्त करने के लिए प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण की सहायता से परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया तथा महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकालने के प्रयास किये गये है।

1. यौन शिक्षा के प्रति उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों (छात्र एवं छात्राओं) की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

सारणी संख्या – 1

यौन शिक्षा के प्रति उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों (छात्र एवं छात्राओं) की अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मूल्य

समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन	टी. मूल्य	सार्थकता स्तर
उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र	40	28.58	7.93	3.41	0.01
उच्च प्राथमिक स्तर के छात्राऐं	40	34.1	9.92		

df = 78 सार्थकता स्तर मान .01 = 2.64

सारणी संख्सा 1 के अनुसार उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं का यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 28.58 व 34.1 तथा मानक विचलन 7.93 व 9.92 प्राप्त हुआ है। दोनों समूह के मध्यमानों के अंतर df = 78 पर टी.मूल्य 3.41 है जो कि सारणीयन मूल्य 0.1 के मान 2.64 से बहुत अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना ''यौन शिक्षा के प्रति उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है; अस्वीकृत होती है।

अतः कहा जा सकता है कि यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में सार्थक अंतर है।

2. यौन शिक्षा के प्रति उच्च प्राथमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

सारणी संख्या – 2

यौन शिक्षा के प्रति उच्च प्राथमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी.मूल्य

समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन	टी. मूल्य
राजकीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी	40	6.52	2.86	3.17
निजी उच्च प्राथमिक स्तर के छात्राऐं	40	8.74	4.09	

df = 78 सार्थकता स्तर मान .01 = 2.64

सारणी संख्सा 2 से स्पष्ट है कि राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय और निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की यौन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 6.52 व 8.74 तथा मानक विचलन क्रमशः 2.86 व 4.09 प्राप्त हुआ है। दोनों समूह के मध्यमानों के अंतर df = 78 पर टी.मूल्य 3.17 है जो कि सारणीयन मूल्य 0.1 के मान 2.64 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पनाओं ''यौन शिक्षा के प्रति उच्च प्राथमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।'' निजी विद्यालय के विद्यार्थियों में यौन शिक्षा के विषय में जानने में जिज्ञासा है, सकारात्मक पक्ष देखने को मिलता है।

शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव

शैक्षिक दृष्टि से यह शोध बहुत महत्वपूर्ण है। वर्तमान में उच्च प्राथमिक स्तर से ही विद्यालयों में

प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा यौन शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है क्योंकि ऐसी बहुत सी जानकारी होती है जो छात्र एवं छात्राओं को ज्ञात नहीं होती है जिसके कारण वे खुले रूप से चर्चा या बात नहीं कर पाते है। इस विषय के प्रति संकुचित भावना होती है। सही ज्ञान प्राप्त होने से विद्यार्थी अपना शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक विकास करते हुए स्वस्थ व्यक्तित्व पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन व्यतीत कर सकेगें। विद्यालयों में पाठ्यक्रमों में यौन समस्याओं एवं यौन व्यवहारों से संबंधित जानकारी अनिवार्य रूप से प्रदान की जाये। अग्रिम शोधकार्य में समाज के विभिन्न वर्गों के दृष्टिकोण को आधार मानकर शोधकार्य किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *कौल, लोकेश, (2001), शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, नोएडा, विकास पब्लिशिंग, हाऊस, नई दिल्ली।*
2. *Morland M. (Ed): Sex difference and schooling Londan Heinemann (1983)*
3. *Offer, D, The psychology wold of the teenager, New York, Basic Books, (1969)*
4. *Maccoby, E. E., & C. N. Jacklin, The psychology of sex differences, Standard, S. Univ. Press (1974)*
5. *Oppenheim, A. N., Questionnaire, design, and attitude measurement. London Moukison and Giff Ltd. (1966)*
6. *Vander Zanden, James W.; Human development fifth ed, McGraw Hill, USA, (1993)*
7. *भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष 35, जनवरी –जून 2016*